Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, FEB-MAR, 2021, VOL-9/44

कोविड-19 में मीडिया प्रसारण और मीडिया कर्मी

धरवेश कठेरिया[1], प्रमोद पाण्डेय[2], टीना राज[3] & पदमा वर्मा[4]

[1] एसोसिएट प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[2] अतिथि अध्यापक, संचार आध्यन एवं शोध विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश।

[3] पीएच.डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[4] एम. फिल. शोधार्थी, जनसंचार विभाग (2016-17), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

Paper Received On: 25 MAR 2021

Peer Reviewed On: 30 MAR 2021

Published On: 1 APRIL 2021

Abstract

मनुष्य मस्तिक में जो छाप एक दृश्य छोड़ सकता है वह किसी अन्य वस्तु में नहीं। मानसिक संवेदनाएं और अन्तर्मन में भाव पैदा करने वाले इसी दृश्य माध्यम का आमजन को जागरूक करने एवं सजग करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कोविड-19 जैसी भयंकर जानलेवा बीमारी जिसने पूरे विश्व को अपने ख़ौफ में जकड़ लिया है, ऐसे में आमजन के मनः मस्तिष्क में नकारात्मक और डर का भाव पैदा होना लाज़मी है। इससे एक सामान्य ज़िंदगी मानो थम सी गई, जैसे, जो मनुष्य जहां है, जैसा है, वहीं रहे। पूरा विश्व जैसे सन्नाटे में ख़ौफ की ज़िंदगी जी रहा हो। ऐसे में मीडिया चैनलों में प्रसारित सूचनाएँ और खबरें ही मनुष्य का एकमात्र सहारा रही। एक अच्छे साथी की तरह मीडिया प्रत्येक उस व्यक्ति का साथी रहा है जो लॉकडाउन में अकेले रहा हो या अपने घरों में परिवार के साथ रहा हो। कोविड-19 से जुड़ी पल-पल की खबर मीडिया चैनलों पर 24 घंटे प्रसारित होती रही। आम जन को दिमागी तौर पर मजबूत बनाने में मीडिया का योगदान अतुलनीय है। साथ ही मीडिया कर्मी जिन्होंने अपनी जान और परिवार की परवाह किए बिना अस्पतालों और अन्य हॉट स्पॉट जैसे क्षेत्रों में जाकर हमें पल-पल की घटनाओं की खबर देते रहे और अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों और कर्तव्यों का निर्वाह करते रहे, उनका कार्य सराहनीय है।

शब्द कुंजी: *कोविड-19, मीडिया, हॉट स्पॉट, ख़ौफ, मानसिक संवेदनाएं, कर्तव्यों का निर्वाह, प्रसारण, मीडिया कर्मी।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शोध उपकल्पना:

- कोविड-19 की खबरों का प्रसारण और मीडिया।
- कोविड-19 के प्रति जनजागरूकता में मीडिया कर्मियों की भूमिका का अध्ययन करना।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शोध के उद्देश्य:

यह अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों से किया गया हैः

- कोविड-19 की खबरों के प्रसारण में मीडिया आमजन सूचना देने का सबसे सशक्त माध्यम है। का विश्लेषण करना।
- कोविड-19 के प्रति जनजागरूकता में मीडिया कर्मियों की भूमिका का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।

अध्ययन की सीमाएं:

प्रस्तुत शोध विषय- 'कोविड-19 में मीडिया प्रसारण और मीडिया कर्मी' अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए मीडिया संबंधी विषयवस्तु को आधार बनाया गया है। शोध में ऐसी अनेकों जानकारी शामिल की गई है जो संपूर्ण मीडियाजगत की आलोचना करती नजर आएगी, जबकि हमारा उद्देश्य केवल मीडिया की भूमिका का अध्ययन करना है। नाकि मीडिया की आलोचना करना।

शोध में किसी विशेष क्षेत्र को शामिल नहीं किया गया है अध्ययन की दृष्टि से मीडिया की भूमिका को जानने के उद्देश्य से कोविड-19 के दौरान विभिन्न टेलिविजन चैनलों के द्वारा किस प्रकार की भूमिका निभाई गई है जिससे आमजन कोविड-19 के प्रति जागरूक हो सका है, का अध्ययन करना है उक्त भूमिका के कारण क्या मीडियाकर्मी भी प्रभावित हुए है? का अध्ययन करना है।

प्रस्तुत अध्ययन में किसी विशेष टेलीविजन चैनल के विशेष कार्यक्रम या निर्धारित समय-सीमा आदि को आधार नहीं बनाया गया है।

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध में "कोविड-19 में मीडिया प्रसारण और मीडिया कर्मी" पर कार्य किया गया है जिसमें मात्रात्मक विधि और द्वितीयक आंकडों का प्रयोग किया गया है। विभिन्न लेखों का अध्ययन भी इस शोध में समिलित है। प्रस्तुत अध्ययन में कोरोना के अतीत की स्थिति से लेकर वर्तमान परिदृशय का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है जिसमें भूतकाल में आई हुई महामारियों के वर्णन के साथ-साथ वर्तमान की स्थितियों का भी अध्यान शामिल है। अन्तर्वस्तु विश्लेषण के माध्यम से प्रस्तुत अध्ययन को स्वरूप देने के लिए टेलीविजन, न्यू मीडिया, समाचारपत्र में प्रकाशित विशेष खबरें, शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेख, पुस्तकें, समसामयिक पत्र-पत्रिकाओं के साथ–साथ निर्धारित आचार-संहिताओं का विश्लेषण किया गया है। अन्तर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि के माध्यम से शोध विषय से संबंधित आवश्यक तथ्यों को खोजने का प्रयास किया गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्रस्तावना:

विश्व में जब-जब किसी घटना के घटित होने की खबर चर्चा में आती है तब-तब मीडिया की भूमिका और उसके नैतिक दायित्व का सवाल सामने खड़ा हो जाता है। मीडिया को उसके भौतिक स्वरूप और वास्तविक स्वरूपों में परिभाषित किया जाता है। उसके आचरण को अच्छे व बुरे रूप में तौला जाता है। परंतु एक ओर जहां मीडिया जनमानस को जागरूक करने का कार्य करता है तो वहीं दूसरी ओर आम लोगों की समस्याओं एवं संवेदनाओं को भी जन-जन तक पहुंचाता है। आज वैश्विक संकट (कोविड-19) के इस भयावह वातावरण में भी मीडिया एक योद्धा की तरह लड़ते हुए उससे जुड़ी हर खबर को जन-जन तक पहुंचा रहा है और सामाजिक ताना-बाना एवं समस्याओं से जनता को रूबरू करा रहा है। लॉकडाउन के दौरान जब मजदूर वर्ग अपने-अपने घरों को पलायन कर रहे थे तब उनके साथ बीती एक-एक घटनाएँ हमें संवेदनाओं से भर देती है। ट्रेनों में, बसों में एवं यहाँ तक की पैदल चलकर सफर करने वाले लोगों के साथ घटित घटनाओं के एक-एक परिदृश्य से मीडिया ने ही हमें परिचित कराया फिर चाहे वह बीबीसी न्यूज़, जी न्यूज़, एबीपी न्यूज़, आज तक के चैनल हों या अन्य न्यूज़ चैनल। विश्व भर की महत्वपूर्ण खबरें हम तक पहुँचती रही। शुरुआत से ही मीडिया चुनौतीपूर्ण कार्य करता रहा है चाहे वह स्वतंत्रता संग्राम में सामाजिक चेतना से संबन्धित हो या सामाजिक कुरुतियों को दूर करने की। कोरोना महामारी के इस दौर में मीडिया के प्रख्यात विद्वान मार्शल मैकलूहान की वह भविष्यवाणी सार्थक सिद्ध होती प्रतीत होती है जिसमें उन्होने विश्व गाँव यानि ग्लोबल विलेज की परिकल्पना की थी जिसका अर्थ है इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तंत्रिका तंत्र का एक दूसरे से जुड़ा होना। अर्थात शोसल मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, घर बैठे कोविड-19 से जुड़े दुनिया भर की खबरों से हमें अपडेट करा रहा है। देश-विदेश में लोग इस महामारी के संकट से कैसे जूझ रहे हैं, कैसे अपनी जान बचाने के लिए लोग प्रयास कर रहे हैं, किस तरह से सड़कों पर आमजन रात गुजार रहे हैं, कैसे एक माँ अपने नन्हें बच्चे को पीठ पर लादे यात्रा कर रही है, कैसे खाने-पीने के कम समान में ही लोग समय गुजार रहे हैं, औरंगाबाद में रेलवे लाइन पर कैसे 16 मजदूरों को कुचलती हुई एक मालगाड़ी निकल गई, इस तरह के दिल दहला देने वाली घटनाओं से मीडिया ने आमजन को रूबरू करवाया। परंतु इन खबरों से आज हम अपने जीवन में नकारात्मकता के प्रभाव को महसूस कर रहे हैं, लेकिन वहीं दूसरी ओर लॉकडाउन में टेलीविज़न पर रामायण का पुनः प्रसारण भी आमजन के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाया है। कोरोनाकाल में सरकार की प्रत्येक नीतियों और कोविड-19 से बचाव से जुड़े अभियानों की जानकारी आमजन तक पहुँचाने में मीडिया एवं मीडिया कर्मियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिस तरह से एक जंग में योद्धा लड़ता है उसी तरह से कोविड-19 के इस अदृश्य शत्रुओं से जंग में मीडिया कर्मियों ने

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

लड़कर संघर्ष करते हुए आमजन तक खबरें पहुंचाई एवं हमें जागरूक किया ताकि हम घर पर ही सुरक्षित रहें।

कोविड-19 एक परिचय

कोरोना वायरस की तरह ही हमारे पृथ्वी पर हजारों तरह के वायरस रहते हैं जिसमें सार्स एक तरह का कोरोना वायरस के जैसा ही है जिससे सन 2002 में दुनिया भर में फैला था। इसी तरह सन 2012 में मर्म जैसा वायरस भी रोग का कारण बना था। परंतु अब यह नए तरह का कोरोना वायरस यानि सार्स-कोव-2 सामने आया है। यह अन्य की तरह ही एक अदृश्य वायरस है जो बिना नज़र आए लंबे समय तक शरीर में बना रहता है और संक्रमित करता है। इस वायरस के शरीर में संक्रमण के बाद सर्दी, खांसी, बुखार, सिर दर्द, थकान जैसे लक्षण सामने आते हैं। अन्य वायरसों से इसमें अंतर केवल इतना है कि यह बहुत ही तेजी से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। यहाँ तक की लक्षण न दिखने पर भी यह वायरस संक्रमित करता है। इसीलिए यह एक घातक महामारी के रूप में उभरा है। किसी संक्रमित व्यक्ति के ज़ोर-ज़ोर से बोलने या खाँसने, छिंकने से ये दूसरे व्यक्ति को संक्रमित कर सकते हैं। यह वायरस श्वसन नली के माध्यम से हमारे फेफड़ों में प्रवेश करता है और श्वसन प्रक्रिया को बाधित करता है जिसे सांस लेने में तकलीफ होती है और व्यक्ति की मौत भी हो जाती है। यह बारीक कण हवा के माध्यम से भी हमारे श्वास नली के द्वारा शरीर में प्रवेश करते हैं अर्थात यह हवा में भी फैलता है।

सर्वप्रथम चीन के वुहान में कोरोना वायरस संक्रामण की बड़ी संख्या में मामला सामने आने के बाद इसे 2019 नोवल कोरोनावायरस (2019-nCoV) नाम दिया गया। बाद में टैक्सोनोमी ऑफ वायरसेज की इंटरनैशनल कमेटी ने इसे severe acute respiratory syndrome corona virus-2 या SARS-CoV2 नाम दिया। चूंकि कोरोना वायरस को कोविड-19 के नाम से जाना जाता है। इसका पूरा नाम Corona virus diseases है। इस बीमारी की शुरुआत 2019 में हुआ इसलिए इसे Corona virus diseases 2019 कहा गया है। अब Corona का CO, Virus का VI और diseases का D और 2019 में मिला इसलिए इन सभी को मिलाकर संक्षिप्त रूप COVID-19 बना है। यह SARS-COV2 वायरस ही है, जिसे कोविड-19 नाम दिया गया है। यह नामकरण 11 फरवरी, 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने किया है।

साइंटिफिक अमेरिकन में प्रकाशित एक चित्रांकन के माध्यम से यह बताता है कि कैसे सार्स-कोव-2 यानि कोरोना वायरस मानव कोशिका में प्रवेश करता है और अपनी प्रतिलिपियां बनाता है, जो अन्य कोशिकाओं में प्रवेश करता है, और संक्रमण फैलता चला जाता है। कोरोना वायरस हमारे शरीर के प्रतिरक्षा प्रणाली को विफल करते हुए पूरे शरीर में धीरे-धीरे फैल जाता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

यह वायरस नाक या मुंह से प्रवेश करके फेफड़ों के संपर्क में आता है और फेफड़ों की सतह पर उपस्थित ACE2 ग्राही के संपर्क में आकार इन कोशिकाओं से बंधकर इनके अंदर चला जाता है। यह वायरस अपनी प्रतिलिपि बनाते हुए एक कोशिका से दूसरे कोशिकाओं में प्रवेश करते चला जाता है और पुरानी कोशिकाओं को मरने के लिए छोड़ देता है। यह इतनी सावधानी से यह कार्य करता है कि व्यक्ति के संक्रमित होने के लक्षण भी नहीं दिखाई देते और जब तक लक्षण नज़र आते हैं तब तक यह वायरस शरीर में फैल चुका होता है।

वर्तमान दौर में कोविड-19 के रोकथाम के लिए टीकाकरण भी उपलब्ध है परंतु यह टीका भी सीधे-सीधे वायरस को नष्ट नहीं करती बल्कि इनके मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है ताकि शरीर के प्रतिरक्षा प्रणाली को संक्रामण से रोकने में मदद मिल सके। यह एंटीवायरल औषधियाँ वायरस को फेफड़े की कोशिका से जुडने से रोकती है और यदि वायरस कोशिका में प्रवेश कर चुका है तो उसे प्रतिलिपियाँ बनाने से रोकता है।

कोरोना वायरस के लक्षण की बात करें तो तीन चीज़ें महत्वपूर्ण है जिनमें लगातार खांसी आना, बुखार होना और गंध और स्वाद का पता नहीं चल पाना है। इसके अलावा सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, गले में खराश, सिने में दर्द आदि लक्षण भी हो सकते हैं, परंतु अभी के समय में इनमें से कोई भी लक्षण न होने के बावजूद भी कोई व्यक्ति संक्रमित पाया जा सकता है। अब अगर कोरोना से बचाव के उपायों की बात करें तो सबसे पहले अपने हाथों को साफ रखें, साबुन से धोते रहें या हैंड सेनिटाइजर का प्रयोग करें। खाँसते या छिंकते वक्त किसी भी व्यक्ति से दूरी बनाए रखें। फिजिकल डिस्टेंटिंग का पालन करें और बाहर जाने पर मास्क पहने रखें। अपनी आँख, नाक या मुंह को बार-बार न छुएं। खांसते या छींकते समय नाक और मुंह को अपनी मुड़ी हुई कोहनी या टिशू से ढक लें। यदि आपको बुखार, खांसी और सांस लेने में कठिनाई है, तो चिकित्सकीय सहायता जरूर लें।

कोविड-19 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

किसी बीमारी या वायरस को समझने के पूर्व उसके इतिहास को जानना आवश्यक होता है। और इसके इतिहास की बात करें तो सर्वप्रथम चीन के वुहान में घटित घटनाओं का दृश्य सामने आता है। यह वह समय था जब पूरी दुनिया 2020 के आगमन की तैयारी में लगी हुई थी तब चीन के वुहान सेंट्रल हॉस्पिटल में डॉ. ली वेनलियांग को कुछ ऐसे मरीज मिले जो फेफड़े की बीमारी जैसे न्यूमोनिया से पीड़ित थे। कुल सात मरीजों में ये लक्षण पाये गए थे। दिसंबर के 30 तारीख को डॉ. ली वेनलियांग ने आशंका जाहीर की कि सार्स (सीवर एक्यूट रिस्पेरटरी सिंड्रोम) जो कि कोरोना वायरस का ही एक रूप है, का नया दौर आ चुका है। यह जानकारी पहली बार चीन में 2003 में सामने आई थी। परंतु यह सार्स का दूसरा चरण नहीं

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

बल्कि कोविड-19 वायरस का पहला चरण था। जिसमें डॉ. वेनलियांग कोविड-19 से संक्रमित हो गए और 34 साल के उम्र में ही उनकी संक्रमण की वजह से मौत हो गई।

कोविड-19 के संक्रमण शुरुआती दौर की बात करें तो यह चीन के वुहान शहर के नए भू-भाग में हुआनान सीफूड मार्केट से हुआ जो मांस, मछलियों के लिए एक तरह से हब या बाज़ार की तरह जाना जाता है। उस समय कोरोना वायरस से संक्रमित ज़्यादातर मरीज हुआनान सीफूड मार्केट में काम करने वाले लोग ही थे। तभी वुहान के स्वास्थ्य आयोग ने इससे संबन्धित अपनी पहली रिपोर्ट बीजिंग प्रशासन को सौंपी और अगले ही दिन बाज़ार को क्वारंटीन किया गया। सीफूड मार्केट के लोगों और जानवरों के सैंपल लिए गए थे तब वे सब कोविड-19 से संक्रमित पाये गए परंतु फिर भी यह पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि कोरोना वायरस इसी बाज़ार से आया क्योंकि वुहान में हुए मेडिकल रिसर्च के मुताबिक इंसानों में कोरोना वायरस, सीफूड मार्केट में संक्रमण के चार सप्ताह पहले ही सामने आ चुका था। जनवरी में वुहान शहर के अस्पतालों में कोरोना के मामले लगातार तेजी से बढ़ते दिखे और देखते ही देखते यह महामारी चीन ही नहीं, बल्कि पुरे एशियाई महाद्वीप में तेजी से फैलने लगी और 11 जनवरी, 2020 को वुहान में कोविड-19 से मौत का पहला मामला सामने आया। इसके बाद यह वायरस चीन के साथ-साथ जापान, थाईलैंड और दक्षिण कोरिया तक पहुँच गया। प्रो. एंडरसन अनुसार कोरोना वायरस, वायरसों का एक बड़ा परिवार है जिनमें सैंकड़ों की पहचान हो चुकी है। यह वायरस चमगादड़, ऊंट, सूअर और बिल्लियों में पाये जाते हैं। उन्होंने बताया कि कोरोना वायरस की उत्पत्ति चमगादड़ों से हुई है जिसके काफी प्रमाण मौजूद हैं। कोविड-19 कोरोना वायरस परिवार का सातवाँ प्रारूप है जो जानवरों से इंसानों तक पहुँच चुका है।

विश्व में कोविड-19 की पृष्ठभूमि

दिसंबर, 2019 में वुहान शहर के अस्पतालों में कोरोना के मामले लगातार तेजी से बढ़ते दिखे और देखते ही देखते यह महामारी चीन के साथ-साथ पूरे एशियाई महाद्वीप में तेजी से फैलने लगी। इसके बाद यह वायरस चीन के साथ-साथ जापान, थाईलैंड और दक्षिण कोरिया तक पहुँच गया। इटली में कोविड-19 से पहली मौत वेनेटो क्षेत्र के एक छोटे से गांव 'वो' में हुआ जो लगभग 3000 आबादी वाला गांव है।

दुनिया भर में कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की कुल संख्या 151,141,668 हो गई है। इस वायरस से अब तक 3,179,474 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि दुनियाभर में कोरोना वायरस से संक्रमित 128,549,571 लोग ठीक हो चुके हैं। अमेरिका, ब्राजील और भारत में कोरोना वायरस के संक्रमण के सबसे ज्यादा आंकड़े सामने आए हैं। अमेरिका में संक्रमण के कुल मामले 33,044,068 तक पहुंच चुके

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

हैं. जबकि अब तक वहां 589,207 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। विश्व में कोरोना के केस तेजी से बढ़ी है और अब यह आंकड़े 19,412,623 पर पहुच गया है।

भारत में कोविड-19 की वर्तमान स्थिति

भारत के परिदृशय में यदि कोरोना की बात की जाए तो इसका पहला मामला केरला के थ्रिस्सूर में 30 जनवरी, 2020 को पाया गया था जिसमे 20 वर्ष की महिला को एक दिन पहले हल्का जुखाम और गले में तकलीफ़ के कारण इमरजेंसी में दिखाया गया तो उसमें वह कोरोना पॉजिटिव पाई गई। उसके पश्चात धीरे-धीरे कोरोना ने भारत में अपने पैर पसारने शुरू करे। उस पर काबू पाने के लिए सरकार ने अलग नियम निकाले जिनका सभी भारतवासियों को पालन करना था।

भारत में पहला मामला केरला में मिलने के उपरांत केरला में 23 मार्च, 2020 से लॉकडाउन का एलान सरकार द्वारा कर दिया था तथा समस्त देश में 25 मार्च, 2020 को एलान किया गया था। पहली लहर जिसमें व्यक्तियों को ख़ासी, जुखाम व शरीर में हल्की हरारत की शिकायत थी इसमें साँस को लेकर दिक्कतें बताई जा रही थी परन्तु सांसो से सम्बंधित मामले कम सामने आये। इस लहर ने अपनी चपेट में वृद्ध लोगों को लिया था उस समय हमारे देश के स्वास्थय कर्मी इससे लड़ने के लिए उतने तैयार भी नहीं थे तथा कोरोना को लेकर लोगों के अंदर भय ज़्यादा था।

देश में यदि दूसरी लहर की बात करें तो यह कोरोना का भयावह रूप था जिसमें हमे अनेकों तरह के वायरस रूप देखने को मिले व इनके फैलने की दर पहले के मुकाबले डबल थी जिस कारण द्वितीय लहर में अधिक मामलें और मौतों का आंकड़ा आसमान छूता दिखा। यह "गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल" वायरस जो की इस लहर में देखने को मिला। इसमें मरीज़ सांसों से लड़ता अधिक दिखा व युवा श्रेणी इसमें ज़्यादा ग्रस्त था, दवाओं, अस्पताल और सांसो की कालाबाज़ारी इस लहर में पहले के मुकाबले अधिक थी। केंद्र सरकार का अभी भी यह कहना है की दूसरी लहर का अभी अंत हुआ नहीं है कि भारत में COVID-19 के 90 प्रतिशत मामले B.1.617.2 (डेल्टा) के प्रकार के फैले हैं। प्रेस कांफ्रेंस में आईसीएमआर- के. डीजी “बलराम भार्गव” ने कहा कि देश में COVID-19 की दूसरी लहर अभी खत्म नहीं हुई है क्योंकि 75 जिलों में अभी भी 10 प्रतिशत से अधिक प्रसार है और 92 जिलों में 5-10 प्रतिशत कोरोनोवायरस अभी भी पाया जा रहा है।

देश में कोरोना के कुल मामले जो अभी तक सामने आए है 3,10,64,908, तथा जो इससे रिकवर हुए है 3,02,27,792. इससे मरने वालों का आंकड़ा 4,13,091. है निरंतर इन आंकड़ों में वृद्धि देखी जा रही है और आने वाले माह में तीसरी लहर की आशंका जताई जा रही है जिसमें 9 वर्ष से कम आयु वाले बच्चों को यह वायरस अपनी चपेट में ले सकता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

टेलिविजन चैनलों पर कोविड-19 की खबरों का प्रसारण एवं जन जागरूकता अभियान

टेलीविज़न पर लगातार कोविड-19 से संबन्धित खबरों एवं रोकथाम के उपायों का प्रसारण किया जा रहा था। परंतु कोविड-19 खबरों में अस्पतालों के बाहर लोगों की चीख़-पुकार, ऑक्सीजन की कमी, रोते परिजन और जलती लाशें, आजकल ये दृश्य मीडिया और सोशल मीडिया पर बहुत आम हो गए हैं पिछले कई दिनों से हम लगातार इन ख़बरों को सुन और देख रहे हैं। लेकिन ये सूचनाएं सिर्फ़ सूचनाओं की तरह नहीं बल्कि डर बनकर भी हमारे दिमाग़ में जगह बना रही है। इस डर से मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है।

कोरोना महामारी के भयवाह वातावरण में जहां निम्न मजदूर वर्ग को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा वहीं दूसरी ओर इस महामारी ने दुनिया भर में विभिन्न समाजों में बीमारी, मृत्यु के साथ-साथ भय भी पैदा किया है। यह भय मृत्यु से भी भयानक है। भय के साथ-साथ आमजन में मानसिक तनाव और नकारात्मक दृष्टिकोण ने भी अपनी जगह बनाई है। इसी डर को समाप्त करने और लोगों में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से मीडिया चैनलों ने कई ऐसी तरकीब अपनाई हैं जिससे लोगों में डर खत्म हो। कोरोना संक्रमण को रोकने और जन-जागरूकता लाने के लिए यह संदेश मीडिया चैनलों में तेजी से प्रसारित किया जा रहा है कि यदि मास्क नहीं पहनोगे और शोसल डिस्टेंटिंग का पालन नहीं करोगे, तो कोरोना हो सकता है।

मीडिया प्रसारण में कोरोना से सावधानियों का संदेश देना और वैक्सीनेशन के लिए प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण तथ्य है। मीडिया में प्रसारित टीकाकरण अभियान के बाद अब पहले की अपेक्षा 5 गुना अधिक लोगों ने टीकाकरण करवाया है जिससे साफ पता चलता है कि टीकाकरण के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ी है। टीकाकरण के प्रति आमजन का रूझान बढ़ाने एवं जागरूक करने में मीडिया की अहम् भूमिका रही है। टीकाकरण के बारे में लोगों के मन में उपजी गलत धाराणाएं एवं भ्रांतियों को मीडिया ने दूर कर लोगों को टीकाकरण के लिए प्रेरित किया। साथ ही कोरोना की तीसरी लहर से बचने और सावधानी बरतने को लेकर भी टेलीविज़न चैनलों में लगातार विज्ञापन, समाचार एवं अन्य महत्वपूर्ण संदेश प्रसारित किए जा रहे हैं। इसके साथ ही विज्ञापन के रूप में संक्षिप्त नाटकीय दृश्य जो लगभग 30

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सेकंड से भी कम के होते हैं, प्रसारित किए जा रहे हैं, जिससे आमजन कोरोना के प्रति काफी सजग हुए हैं और इससे बचाव के उपायों की ओर अग्रसित हुए हैं। महामारी के इस दौर में खुद को मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने हेतु प्रतिदिन खान-पान और दिनचर्या को लेकर भी मीडिया चैनलों पर चर्चा-प्रतिचर्चा और सूचनाएँ प्रसारित किए जा रहे हैं जिसमें सुबह के व्यायाम से लेकर रात के सोने तक की सभी महत्वपूर्ण बातें शामिल होती है। इसी प्रकार कोरोना हो जाने के बाद भी किन-किन उपायों को अपनाना चाहिए जैसे सांस लेने में तकलीफ होने पर उल्टा पेट के बल सोएँ, खाने में प्रोटीन और विटामिन्स लें, भरपूर नींद लें जैसे आवश्यक उपायों के प्रति लोगों को जागरूक करने में मीडिया चैनलों का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

कोविड-19 की खबरों के प्रसारण में मीडिया कर्मियों की भूमिका

कोविड-19 की इस महामारी का प्रकोप आज पूरा विश्व झेल रहा है। इसने न केवल आमजन-जीवन एवं सामाजिक परिस्थितियों को प्रभावित किया है वरन विश्व की आर्थिक स्थिति भी संकट में है। प्रत्येक जंग में योद्धा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, उसी तरह कोरोना महामारी की इस जंग में प्रत्येक योद्धाओं को जो इस मुश्किल घड़ी में अपनी जान की परवाह किए बिना ही सेवाएँ दे रहे हैं, उन्हें पूरा विश्व सलाम करता है। इस दौर में मीडिया कर्मियों की भूमिका महत्वपूर्ण है जिन्होंने घटना स्थल पर स्वयं पहुँच कर रिपोर्टिंग की और हमें उन सूचनाओं से रूबरू कराया। जिस तरह से मेडिकल स्टाफ, सफाई कर्मी, बैंक कर्मी, पुलिस कर्मी आदि जरूरी सेवाओं से जुड़े लोगों ने अपने जीवन की परवाह किए बिना सेवाएँ दे रहे हैं वहीं मीडिया कर्मियों की भूमिका को कैसे नकारा जा सकता है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने मीडिया कर्मियों के स्वास्थ्य को लेकर चिंता ज़ाहिर करते हुए एडवाइजरी जारी की जिसमें प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कर्मियों को महामारी से जुड़ी रिपोर्टिंग के दौरान सचेत रहने की सलाह दी क्योंकि इन्हें संवेदनशील और हॉटस्पॉट चिन्हित किए गए जगहों पर भी जाना पड़ता है।

कोविड-19 से जुड़ी खबरों को कवर करने वाले मीडिया कर्मी जैसे- रिपोर्टर, कैमरामैन, फोटोग्राफर समेत कई मीडिया कर्मी इस महामारी के चपेट में आए हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (Electronic Media) के अनेकों पत्रकारों, विशेष तौर से कैमरामैन और छायाकारों को कोरोना पॉजिटिव पाया गया है। मुंबई में टेस्ट के दौरान 53 मीडिया कर्मी एक साथ पोसिटिव पाये गए। जिसके बाद केंद्र सरकार ने मीडिया कर्मियों के लिए कोविड-19 टेस्ट का इंतजाम करने का फैसला लिया। कोविड-19 से जागरूकता हेतु कई न्यूज़ चैनलों में मीडिया कर्मियों के द्वारा आम लोगों से जो मास्क नहीं लगाए हैं, के साक्षात्कार लेते हुए दिखाये गए और उन्हें और हमें भी मास्क लगाकर सुरक्षित रहने का संदेश दिया गया। लॉकडाउन के तीसरे हफ्ते ही बिजनेस स्टैंडर्ड और इंडियन एक्सप्रेस अखबार ने पत्रकारों की सैलरी में कटौती की

बात कही। वहीं टाइम्स ऑफ इंडिया अखबार ने संडे मैगजीन की टीम को पूरी तरह निकाल दिया। अमरीका, ब्रिटेन, फ़्रांस, इटली और यूरोप के अन्य सभी बड़े देशों के मीडिया संस्थानों के ख़र्चों में कटौती देखने को मिली है और छटनी भी, ताकि तेज़ी से गिरती आमदनी को संभाला जा सके। कई अन्य टेलीविज़न चैनलों में भी मीडिया कर्मियों की छटनी की गई और उनकी सैलरी में भी कटौती की गई बावजूद इसके मीडिया कर्मियों ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों और दायित्वों से मुंह नहीं मोड़ा और लगातार हमें कोविड-19 से जुड़ी खबरों और कोरोना से बचाव से अवगत करा रहे हैं।

निष्कर्ष:

COVID-19 एक वैश्विक संकट है जो पूरी दुनिया में खतरनाक रूप से तेजी से फैल गया है। जनसंचार माध्यम सूचना प्रसारित करके आमजन को जागरूक करने में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं, सार्वजनिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं और बीमारी के प्रसार को कम कर सकते हैं। मीडिया आमजन को विभिन्न प्रकार की जानकारी से अवगत करा रही है टीकाकरण आपको किस तरह सुरक्षित रखेगा, टीकाकरणको लेकर जिस प्रकार का देश में महोल बना था उसे मीडिया ने ही सही किया और लोगों को टीकाकारण के लाभ बताएं, मास्क की उपयोगिता हो या अपने आस-पास के महोल को स्वाछ रखने की बात या फिर इस संकट की घड़ी में लोगों को सकारात्मक सोंच के साथ कोरोना से मुक़ाबला करने के लिए तैयार करना। इस अध्यान में, मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों पर चर्चा की है और किस प्रकार आमजन को जागरूक किया जा सकता है। कोरोना महामारी के समय जब पुरा देश, दुनिया और व्यापार बंद थे, उस समय में मीडिया कर्मियो ने बिना डरे अपने दायित्वों का निर्वाहन किया। इन मीडिया कर्मियो के कारण ही घर पर बैठा व्यक्ति विश्व में हो रही घटनाओं को देख रहा था। दुखी हो रहा था, अपनी संवेदनाएं व्यक्त कर रहा था। शोध में ऐसे अनेक तथ्यों पर प्रकाश डाला है। देश, दुनिया में कोरोना की रोकथाम और कोरोना से सतर्क एवं जागरूक करने में मीडिया कर्मियो की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

सुझाव: प्रस्तुत विषय- “कोविड-19 में मीडिया प्रसारण और मीडिया कर्मी” पर विभिन्न को आधार बनाकर शोध को स्वरूप प्रदान किया गया है। शोध से प्राप्त तथ्यों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते है-\

- मीडिया कर्मियो ने बिना डरे अपने दायित्वों का निर्वाहन किया। जिससे हमें घर बैठे विश्व में हो रही घटनाओं की सम्पूर्ण जानकारी मिलने के कारण ही हम कोरोना से अधिक सावधान हो सके।
- कोरोना महामारी में बहुत अधिक टेलीविजन देखने से बचें।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

- मीडिया के द्वारा नकारात्मक खबरों का भी प्रसारण किया गया है जहां तक संभव हो ऐसी खबरों को देखने से बचें।
- कोरोना वायरस से बचने के लिए मीडिया द्वारा सुझाए गए नियमों का पालन करें।
- सार्वजनिक व्यवहार को सीमित करके हम कोरोना के फैलाव को कम कर सकते है।

सहायक संदर्भ

जोशी रामशरण, मीडिया मिथ और समाज, प्रकाशक- शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, 2008.
तिवारी अर्जून, संपूर्ण पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 2006.
शर्मा राधेश्याम, जनसंचार, (तृतीय संस्करण), प्रकाशक- हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, हरियाणा, 1999.
सिंह देवव्रत, भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली.
सीन मैकब्राइड, मेनी वायसेज, वन वर्ल्ड, कम्युनिकेशन एंड सोसाइटी टुडे एंड टुमौरो, प्रकाशक- यूनेस्को, पेरिस, 1980.
हरिमोहन, रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता, तक्षशिला प्रकाशन, संस्करण 2006.
मित्रा आनंद, टेलीविजन एंड पापुलर कल्चर इन इंडिया, प्रकाशक- सेज पब्लिकेशन, दिल्ली, 1993.
कश्यप श्याम एवं कुमार मुकेश खबरें विस्तार से, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
पचौरी सुधीश दूरदर्शन विकास से बाजार तक, प्रकाशक- प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली 2000.
धूलिया सुभाष, सूचना क्रांति की राजनीति और विचारधारा, प्रकाशक- ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001.
रॉबर्ट डब्ल्यू मैक्चेस्नी, इलेन मिकसिंस वुड, जॉन बेलेमी फॉस्टर (संपादक), राजेंद शर्मा (अनुवादक), पूंजीवाद और सूचना का युग, (भूमण्डलीय संचार क्रांति की राजनीतिक अर्थ व्यवस्था), प्रकाशक- ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2006.
पारख जवरीमल जनसंचार के सामाजिक संदर्भ, प्रकाशक- अनामिका पब्लिकेशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर (प्रा. लि.), नई दिल्ली, 2001.
नोम चोम्सकी, जनमाध्यमों का मायालोक, प्रकाशक- ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 2006.
विलियंस रेमण्ड, सत्यम वर्मा, प्रमोद झा (अनुवादक), संचार माध्यमों का वर्ग चरित्र, प्रकाशक- ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
चतुर्वेदी जगदीश्वर, माध्यम साम्राज्यवाद, प्रकाशक- अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रा.लि., नई दिल्ली, 2002.
https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7557800/
https://ijmsweb.com/role-of-mass-media-and-its-impact-on-general-public-during-coronavirus-disease-2019-pandemic-in-north-india-an-online-assessment/#intro

शोध रिपोर्ट:

https://www.mha.gov.in/sites/default/files/PR_UNLOCK1Guidelines_30052020.pdf
पी.सी. जोशी, कमेटी रिपोर्ट-1986, एन इंडियन पर्सनैलिटी फार इंडियन टेलीविजन।
3.https://www.mha.gov.in/sites/default/files/PR_MHAOrderDt14042020forextendingtheLockdownPeriodtill03052020_14042020.pdf
https://www.mha.gov.in/sites/default/files/CoronaWarriors_04052020.pdf
https://www.mha.gov.in/sites/default/files/PR_15042020RevisedConsolidatedGuidelinesfortheContainmentofCOVID19.pdf
https://ficci.in/spdocument/23200/FICCI-EY-Report-media-and-entertainment-2020.pdf

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

वेबसाइट:

https://www.mha.gov.in/media/mha-press-releases
www. deloi4te.com/in
https://pk.mashable.com
https://qz.com/india
www. indiantelevesion.com
www. ecxchange4media.com
https://www.bhaskar.com/
https://www.amarujala.com/
https://timesofindia.indiatimes.com/
https://penntoday.upenn.edu/
https://qz.com/india
www. mediaresearch.com
www. pitchonnet.com
https://www.bbc.com/hindi/india-52298917
https://www.mpinfo.org/News/TodaysNews.aspx?newsid=20210420N20&LocID=1
https://www.bbc.com/hindi/india-52143427
https://www.gisaid.org/
https://www.bbc.com/hindi/science-53127856
https://www.eklavya.in/magazine-activity/srote-magazine/609-srote-2020/srote-september-2020/3907-covid-19-virus-ek-sachitr-parichay
https://economictimes.indiatimes.com/hindi/news/coronavirus-which-country-in-the-world-has-how-much-covid19-infected-patients/articleshow/74648830.cms?from=mdr
https://economictimes.indiatimes.com/news/india/covid-2nd-wave-not-over-yet-90-cases-in-india-driven-by-delta-variant-govt-experts/videoshow/83843435.cms
https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC8106236/
https://en.wikipedia.org/wiki/COVID-19_pandemic_in_India
https://www.worldometers.info/coronavirus/country/india/

फोटो संदर्भ:

https://www.google.com/search?q=coronavirus+photo&rlz=1C1CHBF_enIN815IN815&sxsrf=ALeKk01R901h7ZM4UtDgJoZ9tNbFdULhvA:1627377414531&source=lnms&tbm=isch&sa=X&sqi=2&ved=2ahUKEwj5jNWl9YLyAhX9I7kGHRQDCFYQ_AUoAXoECAEQAw&biw=1366&bih=568#imgrc=nSMmZsbSNahJPM
https://www.google.com/search?q=coronavirus+india+photo&tbm=isch&ved=2ahUKEwi7yd6r9YLyAhUCH3IKHXY5AUQ2cCegQIABAA&oq=coronavirus+photo+ind&gs_lcp=CgNpbWcQARgAMgYIABAIEB46AggAUJuLE1j_mxNghKYTaABwAHgAgAHiAYgBswaSAQUwLjEuM5gBAKABAaoBC2d3cy13aXotaW1nwAEB&sclient=img&ei=E8__YPvzD4KyAP28oyoDg&bih=568&biw=1366&rlz=1C1CHBF_enIN815IN815#imgrc=ghU8Rg_CiuY6dM
https://www.google.com/search?q=coronavirus+india+photo+media&tbm=isch&ved=2ahUKEwjt1fDA9oLyAhUbPysKHfjYCvgQ2cCegQIABAA&oq=coronavirus+india+photo+media&gs_lcp=CgNpbWcQAzoECAAQHlCRuwtYccLYN7MC2gAcAB4AIABhAKIAYoJkgEFMC40LjKYAQCgAQGqAQtnd3Mtd2l6LWltZ8ABAQ&sclient=img&ei=TND_YO3_AZv-rAH4savADw&bih=568&biw=1366&rlz=1C1CHBF_enIN815IN815#imgrc=I07wQqW-L8RYdM&imgdii=mdjzmJ_aoo5WFM
https://www.google.com/search?q=coronavirus+india+photo+media&tbm=isch&ved=2ahUKEwjt1fDA9oLyAhUbPysKHfjYCvgQ2cCegQIABAA&oq=coronavirus+india+photo+media&gs_lcp=CgNpbWcQAzoECAAQHlCRuwtYccLYN7MC2gAcAB4AIABhAKIAYoJkgEFMC40LjKYAQCgAQGqAQtnd3Mtd2l6LWltZ8ABAQ&sclient=img&ei=TND_YO3_AZvrAH4savADw&bih=568&biw=1366&rlz=1C1CHBF_enIN815IN815#imgrc=sU3q5ae977oSrM&imgdii=QWRK-7VF-NNHCM

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language